भारतीय कला का परिचय

भाग 1

ललित कला की पाठ्यपुस्तक
कक्षा 11 के लिए

© NCERT
not to be republished

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जून 2018   ज्येष्ठ 1940

PD 1T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2018

₹ 125.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा अंकुर ऑफ़सेट प्राइवेट लिमिटेड, ए-54, सैक्टर - 63, नोएडा - 201301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN-978-93-5292-073-0

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016   **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
होस्डेकेरे हेली एक्सटेंशन
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरू 560 085   **फोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014   **फोन : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट धनकल बस स्टॉप, पनिहटी
कोलकाता 700 114   **फोन : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021   **फोन : 0361-2674869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*गौतम गांगुली*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
संपादन सहायक	:	*ऋषिपाल सिंह*
उत्पादन अधिकारी	:	*अब्दुल नईम*

आवरण
सुरेन्द्र कुमार

ले-आउट
सीमा श्रीवास्तव

© NCERT not to be republished

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् लगभग पाँच दशकों से लगातार विद्यालयी शिक्षा पद्धति में सुधार लाने के लिए कार्यरत है। विगत वर्षों में खासतौर पर *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा* (एन.सी.एफ.) - 2005 के पश्चात् पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण, उनकी प्रस्तुति एवं अंतरविषयी दृष्टिकोण में, अभ्यास के प्रश्नों इत्यादि में विशेष बदलाव देखने को मिलता है। इन प्रयासों ने पाठ्य-पुस्तकों को विद्यार्थियों के लिए सहज बनाया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, जो छात्रों के लिए विद्यालयी स्तर का अंतिम चरण है, उन्हें विषयों के अधिक विकल्प मिलने चाहिए जिससे वह आगे उच्च शिक्षा अथवा व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ सकें। इस दृष्टिकोण से परिषद् द्वारा सर्वप्रथम कला के अनेक विषयों में पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है।

शिक्षा के इस चरण में, ललित कला के पाठ्यक्रम को एक व्यावसायिक दृष्टिकोण से आकलित किया गया है जिससे वह उच्च माध्यमिक स्तर तक दिया जाने वाला सामान्य ज्ञान का विषय न होकर एक अध्ययन के विषय के रूप में देखा गया है। इन कक्षाओं में ललित कला के अधिगम के उद्देश्य भी मुक्त अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर विद्यार्थियों के कौशल विकास और उनके द्वारा अपनी शैली और विशिष्ट माध्यम से काम करना है। इस स्तर पर दृश्य कला के विद्यार्थियों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे भारत एवं विश्व के कला इतिहास की समझ भी बनाएँ। कला इतिहास, कला के अध्ययन का ही एक भाग है और स्वयं में एक अलग विषय भी जिससे विद्यार्थी अपनी विरासत के बारे में जान पाते हैं। ज्ञात है कि देश की विभिन्न शिक्षा परिषदें दृश्य अथवा ललित कला विषयों को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पढ़ाती हैं जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला, व्यावहारिक कला अथवा व्यावसायिक कला जैसे विषय शामिल हैं। इन सभी पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के पश्चात् राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने इस पाठ्यक्रम में प्रयोग के अतिरिक्त सिद्धान्त का हिस्सा भी शामिल है जिससे देश की कला, ऐतिहासिक विरासत और स्थापत्य के विषय में विद्यार्थी जानकारी प्राप्त करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए कक्षा 11 के लिए *'भारतीय कला का परिचय, भाग–1'* नामक पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है।

कक्षा 11 की इस पाठ्यपुस्तक में प्रागैतिहासिक काल के गुहा भित्तिचित्रों की परंपरा और उसका बौद्ध काल में और उसके बाद देश के विभिन्न भागों में बौद्ध, जैन एवं हिन्दू मूर्तिकला और स्थापत्य कला में विस्तार देखने को मिलता है। इंडो-इस्लामिक काल में कला के निर्माण के एक नए युग का आरंभ हुआ। इसके अंतर्गत अनेक विशाल किलों, मस्जिदों, मकबरों और महलों का निर्माण हुआ जिनकी विभिन्न शैलियों के विषय में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई है। इस तरह विद्यार्थियों का परिचय भारतीय संस्कृति से कराया गया है।

© NCERT not to be republished

रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक समितियों द्वारा किए गए कठिन परिश्रम की प्रशंसा करती है। हम इस पाठ्यपुस्तक की निर्माण समिति के मुख्य सलाहकार रतन परिमू, *अध्यक्ष* (सेवानिवृत्त), ललित कला संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा के प्रति इस कार्य के मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त करते हैं। समिति में सम्मिलित सभी इतिहासकारों के लिए विद्यालय स्तर के छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तक का निर्माण एक चुनौती थी जिसमें वे सफल हुए और उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है। हम उन संस्थानों और संगठनों के आभारी हैं, जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्रियों और कार्मिकों को हमारे साथ साझा करने की अनुमति दी। हम मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा नियुक्त राष्ट्रीय निगरानी समिति के सदस्यों के प्रति विशेष रूप से आभारी हैं, जिसमें अध्यक्ष के तौर पर प्रोफेसर मृणाल मीरी और प्रोफेसर जी.पी. देशपांडे ने अपना मूल्यवान समय और योगदान दिया। अपने उत्पादों की गुणवत्ता और व्यवस्थित सुधार और निरंतर उन्नति के लिए वचनबद्ध संगठन के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. टिप्पणियों और सुझाव का स्वागत करती है जो भविष्य में इसके संशोधन और परिष्कृतिकरण में हमारी सहायता करेंगे।

नयी दिल्ली
मई 2018

हृषिकेश सेनापति
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT
not to be republished

प्रस्तावना

ब्रिटिश शासन काल में, कुछ ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारियों ने कुछ भारतीय विद्वानों के साथ मिलकर भारत के अतीत का अध्ययन करने में अपनी सक्रिय रुचि दिखाई। उनके ऐसे प्रयासों के फलस्वरूप भारत में कला सम्बंधी स्मारकों के अध्ययन का कार्य सुव्यवस्थित रूप से शुरू हुआ। सर्वप्रथम ऐसे स्मारकों की सूची बनाकर उनका संक्षिप्त प्रलेख तैयार किया गया जो भारत के अतीत के अवशेषों के सुस्पष्ट साक्ष्य थे। तत्पश्चात् पुरातत्वीय खोजों और खुदाइयों का काम शुरू किया गया, जिसके फलस्वरूप अनेक कला सम्बंधी ऐतिहासिक स्थलों का पता चला। शिलालेखों तथा उत्कीर्ण लेखों को पढ़ा और समझा गया। प्राचीन सिक्कों/मुद्राओं आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। ऐसी जानकारियों के आधार पर हमें अतीत की कलात्मक परंपराओं को जानने-समझने में सहायता मिली। धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन के साथ-साथ धर्म के इतिहास का भी अध्ययन किया गया और पुरानी प्रतिमाओं/मूर्तियों एवं चित्रों को पहचानने का कार्य प्रारंभ हुआ जो आरंभिक ज्ञान एवं विद्वता को जानने-समझने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन बन गया। वैसे तो कला के इतिहास का अध्ययन पुरातत्वीय अध्ययनों के क्षेत्र में ही विकसित हुआ था किन्तु अब इसे एक विशिष्ट शास्त्र यानी एक अलग विषय के रूप में मान्यता दी गई है। पाश्चात्य देशों में, प्रमुख रूप से यूरोप में इस विषय ने अनेक प्रणाली तंत्रीय साधनों की सहायता से पर्याप्त उन्नति की है किन्तु भारत में अभी तक यह अनुसंधनात्मक प्रणालियों में विकास की प्रक्रिया तक ही सीमित है।

चूंकि कला के इतिहास का अध्ययन व्यापक प्रलेखन तथा उत्खनन कार्यों के आधार पर विकसित हुआ है इसलिए कलात्मक वस्तुओं का वर्णन इस विषय के अध्ययन का प्रमुख आधार बन गया है। बीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में ऐसे बहुत ही कम उल्लेखनीय अध्ययन किए गए, जहां चिंतन का विषय साधारण वर्णन से आगे बढ़ा हो और अध्ययनकर्ताओं ने वर्णन के अलावा कुछ और भी विवेचन किया हो। अनेक स्मारकों, मूर्तियों और शैलियों का नामकरण तत्कालीन राजवंशों के आधार पर किया गया, जैसे—मौर्य कला या मौर्य कालीन कला, सातवाहन कला, गुप्त कालीन कला आदि। इसके अलावा, कुछ कलाकृतियों के काल का नामकरण धार्मिक आधार पर भी किया गया, जैसे—बौद्ध काल, हिंदू काल और इस्लामिक या मुस्लिम काल। लेकिन इस तरह निर्धारित किए गए नाम, कला की परंपराओं को समझने के लिए उपयोगी नहीं हैं। मध्य युगीन कला और वास्तु संबंधी स्मारकों को अनेकों रूपों में राजवंशों का संरक्षण मिला, लेकिन इससे पहले के ऐतिहासिक काल को भी राजवंशों के नामों से जोड़ दिया गया और वे आज भी प्रचलित हैं।

© NCERT not to be republished

प्राय: किसी भी कलावस्तु का अध्ययन दो महत्वपूर्ण तरीकों या दृष्टिकोणों से किया जाता है, जिन्हें (i) रूपाकारवादी (फॉर्मेलिस्टिक) या शैलीगत (स्टाइलिस्टिक) अध्ययन, और (ii) विषय-वस्तु विश्लेषण कहा जाता है। पहली श्रेणी यानी रूपाकारवादी श्रेणी के अंतर्गत मूर्ति, स्थापत्य या चित्रों की रूपाकारवादी विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है, जबकि दूसरी श्रेणी के अंतर्गत विषयवस्तु के विश्लेषण के विभिन्न स्तरों का उल्लेख किया जाता है, जिसके अनेक घटक होते हैं, जैसे मूर्ति/प्रतिमा विद्या का अध्ययन (आइकोनोग्राफिक स्टडी), प्रतिमा विज्ञान (आइकॉनोलॉजी), आख्यान और संकेत विज्ञान।

प्रतिमा विद्या के अंतर्गत प्रतिमाओं की पहचान करना सिखाया जाता है। यह पहचान कतिपय प्रतीकों एवं संकेतों और उनके बारे में प्रचलित मिथकों तथा आख्यानों के माध्यम से की जाती है जबकि संकेतों के विकास का अध्ययन उनके ऐतिहासिक, सामाजिक और दार्शनिक संदर्भ में किया जाता है। आज प्रणालीतंत्रीय रूपरेखा के अंतर्गत कला उत्पादन की प्रक्रिया में अनेक सरोकारों और मुद्दों की खोज करने की कोशिश की जाती है और परंपरागत मूल्यों से बाहर निकलने का प्रयास किया जाता है। यह द्रष्टव्य है कि विभिन्न धार्मिक विचारधाराओं के राजनीतिक आशय या उद्देश्य अभी तक व्यापक अनुसंधान की प्रक्रिया के अंग नहीं बन पाए हैं। धार्मिक विचारधाराएँ भी प्राचीन भारत में सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं का रूपनिर्धारण करने में सहायक रही हैं, इसलिए ऐसे कारकों का अध्ययन करना भी महत्वपूर्ण बन जाता है जिन्होंने विभिन्न कला रूपों को प्रभावित किया है। धार्मिक स्थलों से काफी बड़ी मात्रा में सामग्री प्राप्त हुई है किन्तु इससे यह अर्थ नहीं निकलता कि धार्मिक क्षेत्रों में कला का आविर्भाव या प्रचार नहीं था। पक्की मिट्टी की छोटी-छोटी मूर्तियाँ ऐसे धर्म-निरपेक्ष कला-क्षेत्रों के सर्वोत्तम उदाहरण हैं, किन्तु स्थानाभाव के कारण कला के विवेचकों द्वारा उनका उल्लेख मात्र ही किया गया है, उन पर विस्तार से चर्चा नहीं की गई है। तथापि प्रस्तुत पुस्तक में मानक परंपरागत विवरणात्मक लेखन से परे हटकर कला तथा पुरातत्वीय स्मारकों के अपेक्षाकृत अधिक व्यापक विकास का अध्ययन किया गया है और यह बताने का प्रयास किया गया है कि उनके विकास की शैलियाँ क्या थीं और सामाजिक तथा राजनीतिक संबंध कैसे और किसके साथ थे। इस प्रकार यह पाठ्यपुस्तक भारतीय कला के इतिहास के अध्ययन का एक विनम्र प्रयास है।

आज देश में बौद्ध, शैव, वैष्णव, शाक्त और मातृपूजक जैसे विभिन्न संप्रदायों एवं पंथों तथा इस्लाम जैसे धर्मों के अनेक स्मारक देखने को मिलते हैं। वे सब हमारी सांस्कृतिक विरासत के अभिन्न अंग हैं। हमारी सामाजिक संस्कृति विभिन्न विचारधाराओं का सुंदर संगम है, जो वास्तु/स्थापत्य कला, मूर्तिकला और चित्रकला के नाना रूपों में अभिव्यक्त हुई है। इनका अध्ययन धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टिकोणों से करने की आवश्यकता है। साथ ही सांस्कृतिक परंपरा के एकरेखीय चित्रण पर भी पुन: विचार करना आवश्यक है, क्योंकि यह हमारे प्राचीन अतीत की वास्तविकताओं से हटकर है। उन दिनों भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य कलाकारों या कलाशिल्पियों की अलग-अलग श्रेणियों द्वारा किए जाते थे। जब किसी धार्मिक या राजनीतिक सत्ताधारी को कोई स्मारक, राजमहल या मंदिर बनवाना होता था तो वह संबंधित कलाकारों या शिल्पियों की श्रेणी को काम सौंप देता था और वे कलाशिल्पी सौंपे गए कार्य को अपनी नूतन उद्भावनाओं के

© NCERT not to be republished

साथ संपन्न करने के लिए विभिन्न कार्यविधियां अपनाते थे। शैलीगत श्रेणियाँ शीघ्र अतिशीघ्र नहीं बदला करती थीं। वे लंबे समय तक अपरिवर्तित बनी रहती थीं, इसलिए भारतीय कला का अध्ययन करते समय, अध्येता को इन बहुत सी महत्वपूर्ण बातों को अपने ध्यान में रखना होगा। इस पुस्तक में प्राक् एवं आद्य-ऐतिहासिक काल से इस्लामिक काल तक के स्मारकों के बारे में एक परिचयात्मक रूपरेखा ही प्रस्तुत की गई है। इस मर्यादा को ध्यान में रखते हुए, विकास क्रम के स्वरूप को समझने के लिए बहुत कम उदाहरण दिए गए हैं और वे उदाहरण मात्र ही हैं और कुछ नहीं। लेकिन हमारा अभिप्राय यह नहीं है कि हम किसी भी ऐसे उदाहरण को अमान्य या अलग कर दें जो हमारे विचार से अधिक महत्वपूर्ण नहीं। बल्कि इस कार्य में योगदान करने वाले सभी लेखकों ने अपने-अपने विषयों का सांगोपांग चित्र प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया है। पुस्तक के सभी अध्यायों में देश के प्रत्येक क्षेत्र में प्रचलित कलाओं के विभिन्न रूपों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।

मनुष्य ने जब पृथ्वी पर जन्म लिया था, तभी से मानव सभ्यता का आरंभ हो गया था। भारत भर में सर्वत्र पत्थर के औजारों के अनेक उदाहरण मिलते हैं। यही त्रि-आयामी रूप के साथ मानव की अंतरक्रिया का एकमात्र बचा हुआ उदाहरण है। प्रागैतिहासिक शैल-कला किसी जादुई कर्मकांड या धार्मिक विश्वास प्रणाली की देन है। प्रागैतिहासिक शैल-चित्र भारत में अनेक स्थानों पर पाए जाते हैं। इनके कुछ महत्वपूर्ण उल्लेखनीय स्थल हैं—भोपाल के पास स्थित भीमबेटका की गुफाएँ, उत्तर प्रदेश में स्थित मिर्जापुर की पहाड़ियाँ और कर्नाटक के बेल्लारी जिले की पहाड़ियाँ। भीमबेटका के शैल-चित्र चट्टानी आश्रय-स्थलों पर उत्कीर्णित और चित्रित किए गए हैं। आकृतियाँ साधारण रेखाओं के रूप में प्रस्तुत की गईं हैं। उन्हें सक्रिय रूप में यानी कोई क्रिया करते हुए दर्शाया गया है, उनके हाथ-पैर इकहरी रेखाओं से बनाए गए हैं। इन शैलाश्रयों में अधिकतर शिकार और नृत्य की क्रियाओं के दृश्य प्रस्तुत किए गए हैं। भीमबेटका का समय मध्य पाषाण काल (मेसोलिथिक पीरियड) यानी 11,000-3000 ई.पू. माना जाता है। ये चित्र, रेखाओं का सम्यक् प्रयोग करते हुए, दृश्यों को चित्र रूप में प्रस्तुत करने की मानवीय आकांक्षा के द्योतक हैं।

© NCERT not to be republished

महात्मा गांधी का जंतर

मैं तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ —

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानी क्या उससे उन करोड़ो लोगों को स्वराज मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त हो रहा है।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

मुख्य सलाहकार
रतन परिमू, *अध्यक्ष* (सेवानिवृत्त), ललित कला संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा

सलाहकार
वाई. एस. अलोने, *प्रोफ़ेसर*, कला एवं सौंदर्यशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सदस्य
सीमा एस. ओझा, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, इतिहास, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

नमन आहुजा, *प्रोफ़ेसर,* कला एवं सौंदर्यशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

शमा मित्रा चेनॉय, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* इतिहास, शिवाजी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

के.सी. चित्राभानु, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), कला इतिहास, राजकीय ललित कला महाविद्यालय (कॉलेज), तिरुअनंतपुरम्

सुचिता रावत, *पी.जी.टी.,* ललित कला, दिल्ली पब्लिक स्कूल, भोपाल

संतोष जैन, *अध्यक्ष* (सेवानिवृत्त), चित्रकला विभाग, दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत कुंज, नयी दिल्ली

अनुवाद
परशुराम शर्मा, *पूर्व निदेशक*, केन्द्रीय सचिवालय (राजभाषा), भारत सरकार, नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक
ज्योत्स्ना तिवारी, *अध्यक्षा* एवं *प्रोफ़ेसर,* कला एवं सौंदर्य शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

© NCERT
not to be republished

आभार

हम पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के रतन परिमू, *मुख्य सलाहकार*, वाई.एस. अलोने, *सलाहकार*, एवं अन्य सभी सदस्यों के आभारी हैं जिन्होंने पाठ्यपुस्तक को इस स्वरूप तक पहुंचाने में मदद की। इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं के भी हम आभारी हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से पाठ्यपुस्तक निर्माण में सहयोग दिया।

हम सुरेन्द्र कौल, तत्कालीन *महानिदेशक,* सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सी.सी.आर.टी.) के आभारी हैं जिन्होंने हमें उदारतापूर्वक अपने संसाधनों का प्रयोग करने की स्वीकृति दी।

हम वी.के. जैन, *आचार्य* (सेवानिवृत्त), मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, के भी आभारी हैं जिन्होंने पाठ्यपुस्तक की समीक्षा के दौरान बहुमूल्य सुझाव दिये। हम ममता गौड़ एवं आदित्य शुक्ला, *संपादक* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के भी आभारी हैं जिन्होंने पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि को गौर से देखा और सुझाव दिये।

अजय प्रजापति और अनीता कुमारी, *डी.टी.पी. ऑपरेटर्स*, प्रकाशन प्रभाग के हम विशेष आभारी हैं।

© NCERT
not to be republished

विषय सूची

प्राक्कथन		*iii*
प्रस्तावना		*v*
1.	प्रागैतिहासिक शैल-चित्र	1
2.	सिंधु घाटी की कलाएँ	8
3.	मौर्य कालीन कला	18
4.	भारतीय कला और स्थापत्य में मौर्योत्तर कालीन प्रवृत्तियाँ	27
5.	परवर्ती भित्ति-चित्रण परंपराएँ	61
6.	मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला	68
7.	भारतीय कांस्य प्रतिमाएँ	103
8.	इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला के कुछ कलात्मक पहलू	109
शब्दावली		126

© NCERT not to be republished